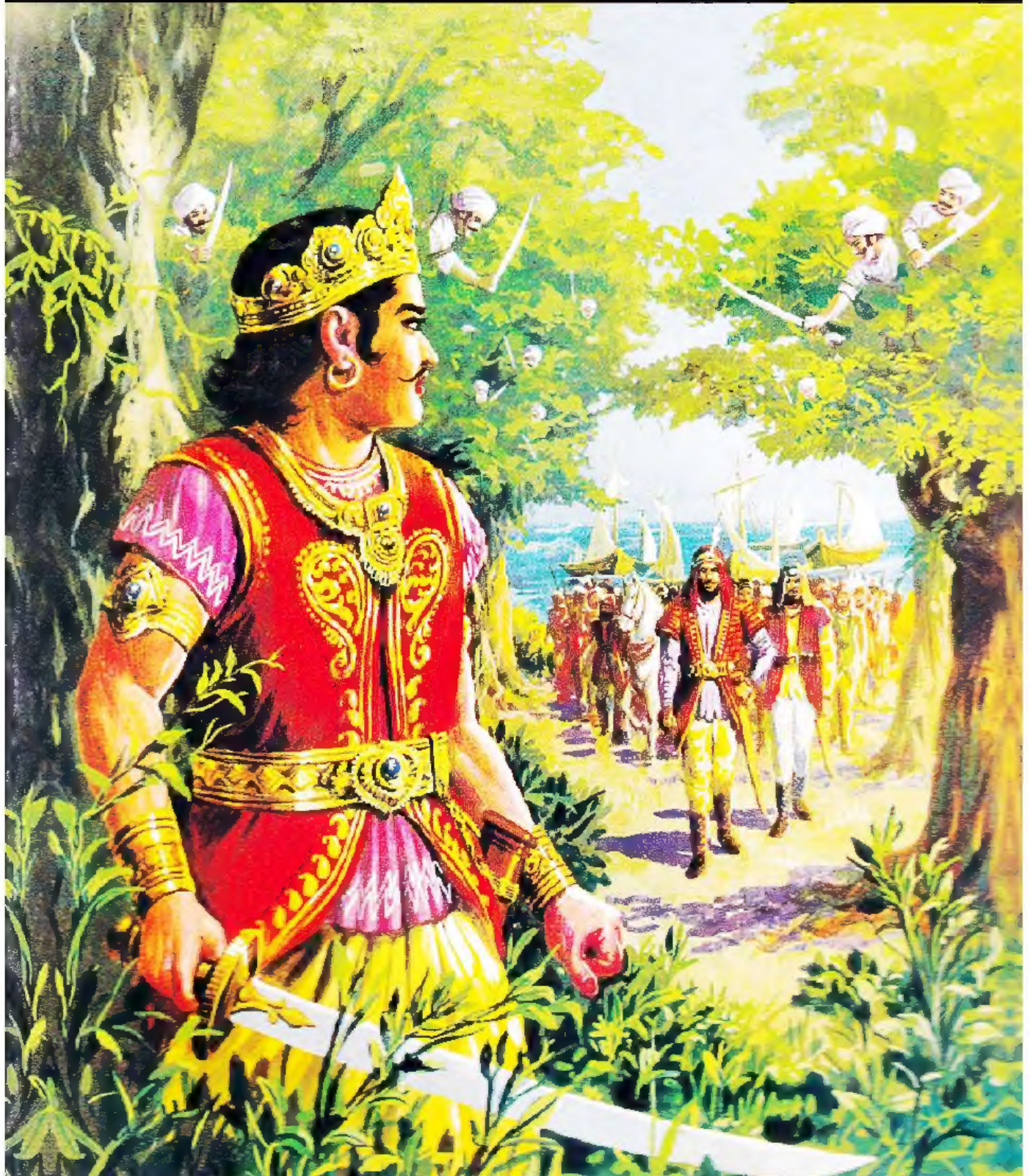




बालादित्य और यशोधर्मा

हूणों का फटकार

Vol 717 | ₹90





तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं -- भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक पिछेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः बर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की लघुसंक्षेप कहानियाँ
भारतीय उत्कृष्ट साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदबहार लोक कथाएँ, दंत कथाएँ तथा विवेक और हास्य से परि कथानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन धूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टि
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
कमलेश पांडे	दिलीप कदम	अनंत पै

मुखपृष्ठ
सी. एम. चिट्ठाकर

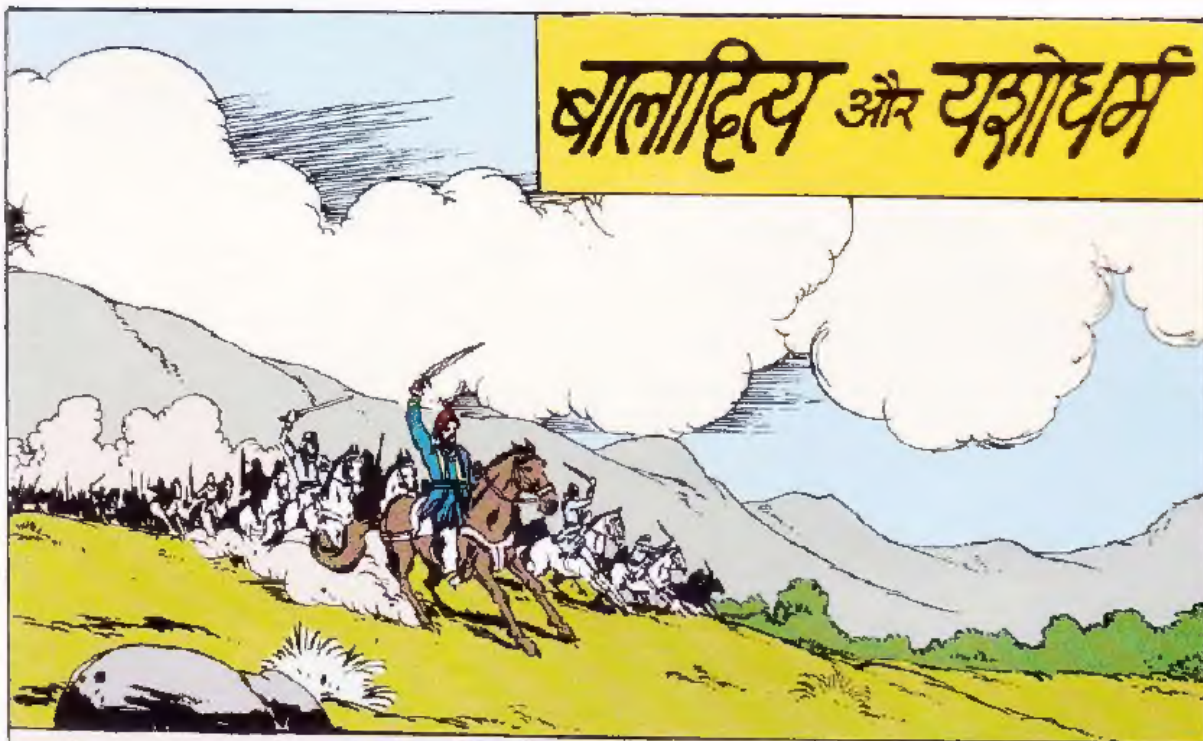
Amar Chitra Katha Pvt Ltd

© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted June 2022
ISBN 978-93-90055-54-8

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhaniak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri East, Mumbai 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : +91-22 49186881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to photocopying, document or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

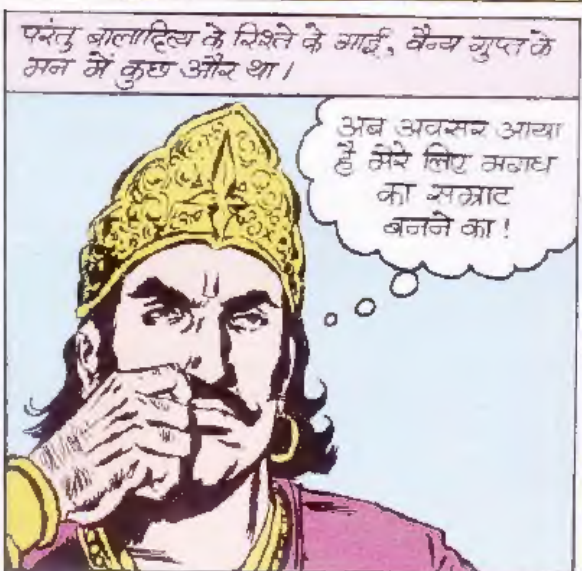
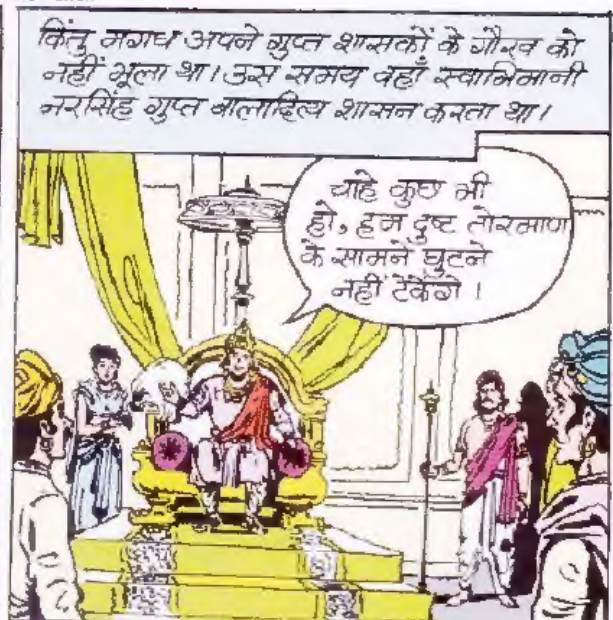
बालाहृत्य और यशोधर्म

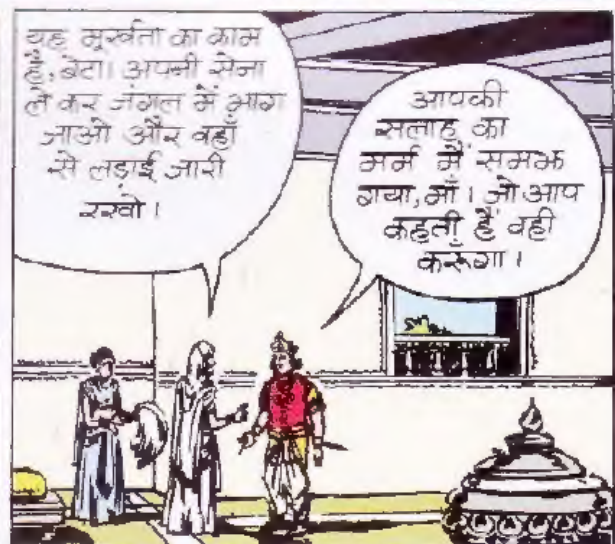
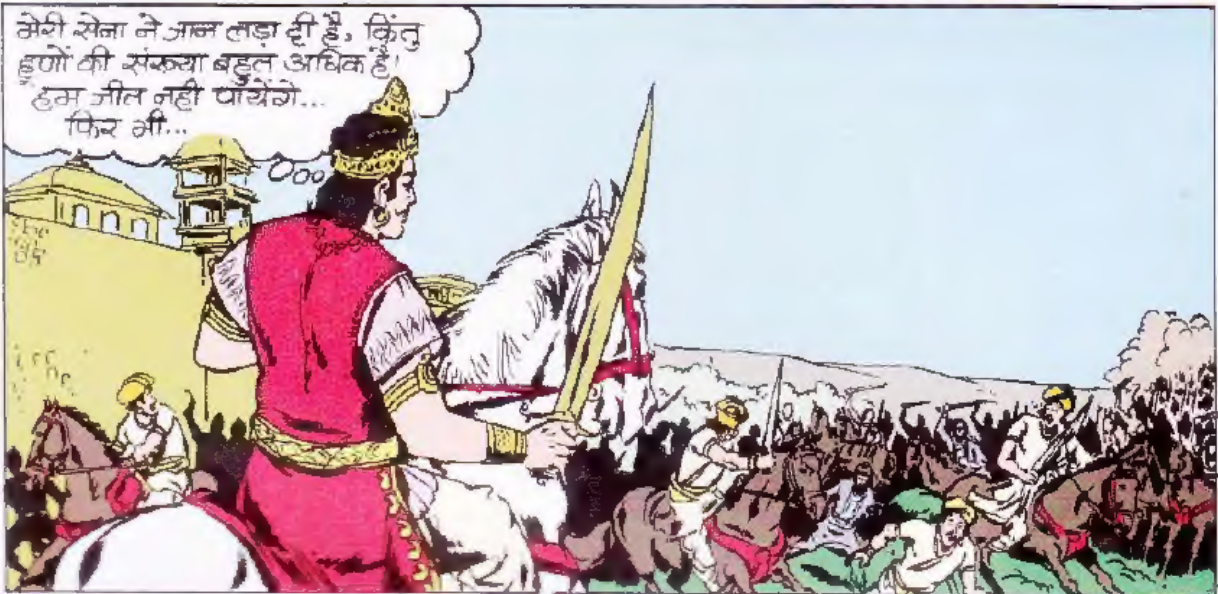
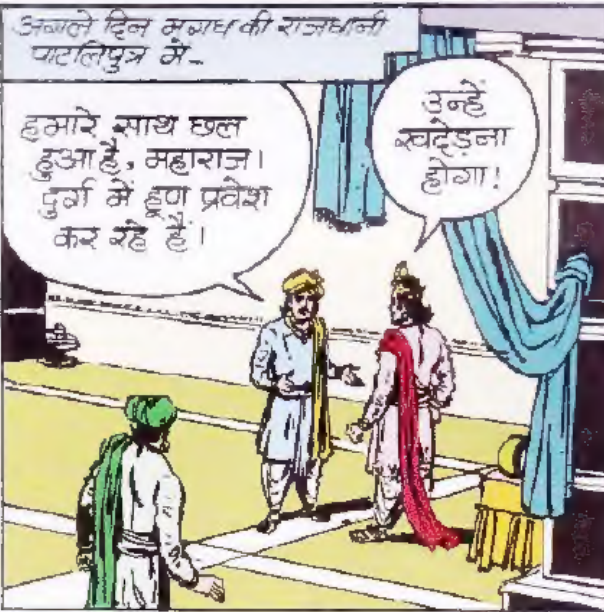


स्कंदगुप्त के काल में हुणों ने कई बार मगध पर हमले किये, पर हर बार उन्हें मुँह की खाली पड़ी। किंतु पाँचवीं सदी के अंत में उसकी मृत्यु के बाद उन्होंने फिर बढ़ाई की। इस बार चालाक और निर्दय तोरमाण उनका नेता था।



* मायो! मायो!





बालादित्य और उसके सैनिक जंगल में भाग गये...

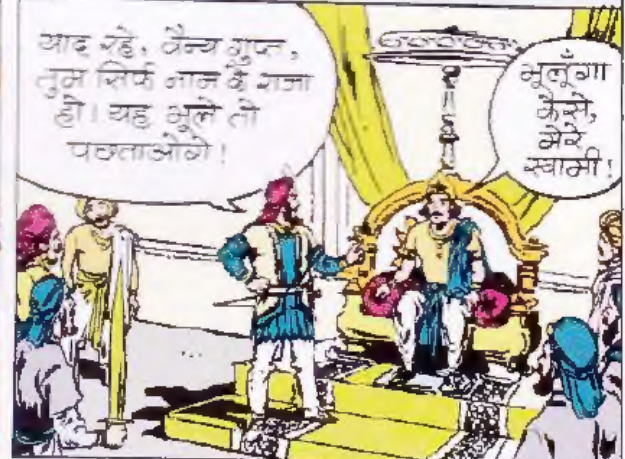


... और तोरमाण पारलिपुत्र के राजमहल में पहुँचा।



यह है उस स्कंद गुप्त का सिंहासन जिसने भारत को जीतने के हूणों के सपने को चूर-चूर किया था! हा! हा! हा! हा!

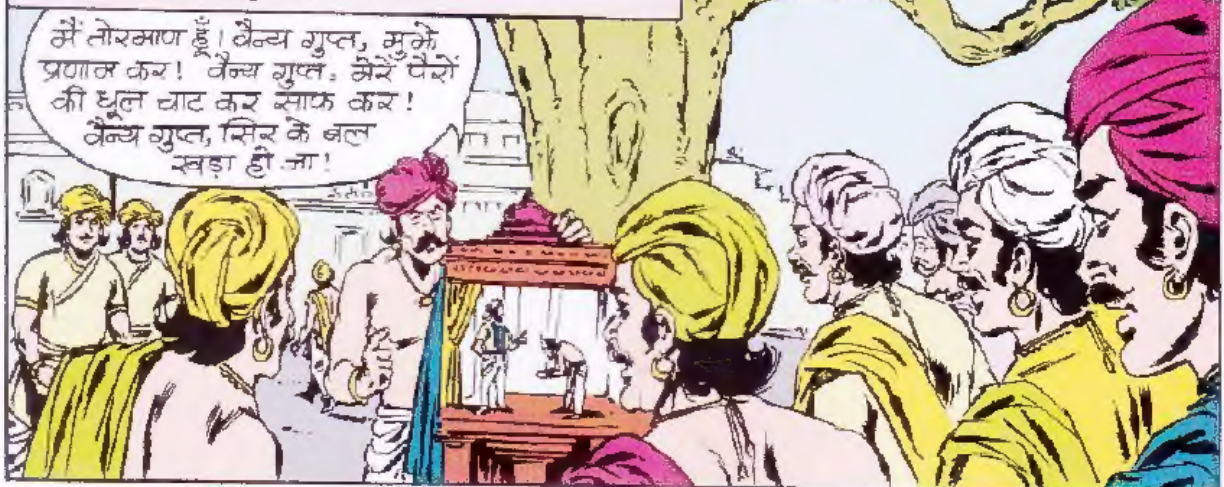
उसने वैज्य गुप्त को सिंहासन पर बिठाया।



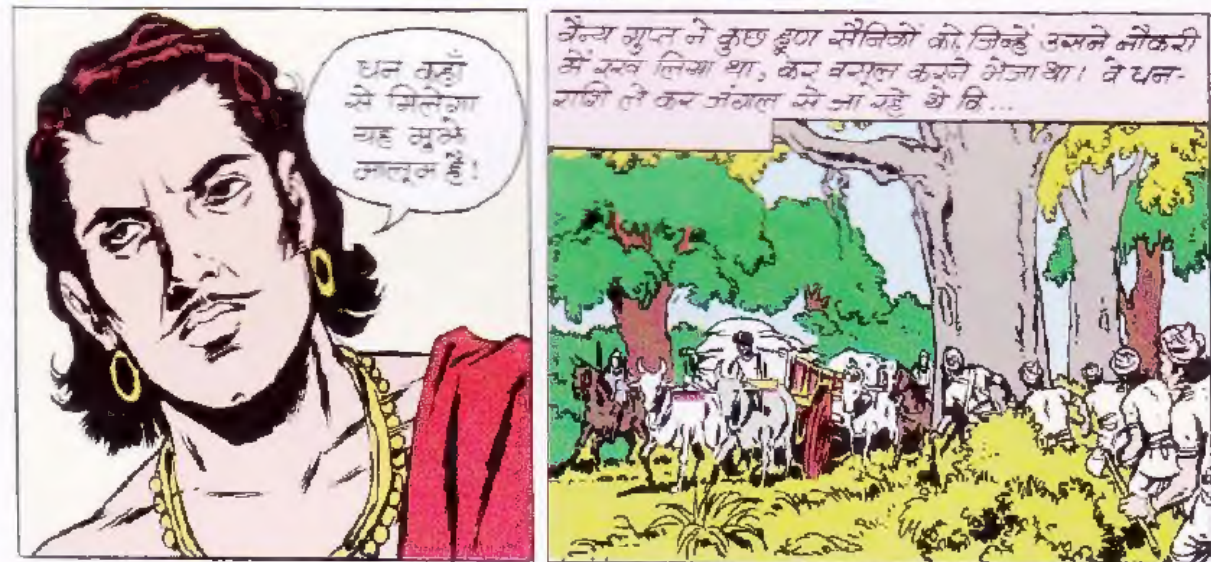
याद रहे, वैज्य गुप्त, तुम सिर्फ नाम के राजा हो। यह भुले तो पछताओगे!

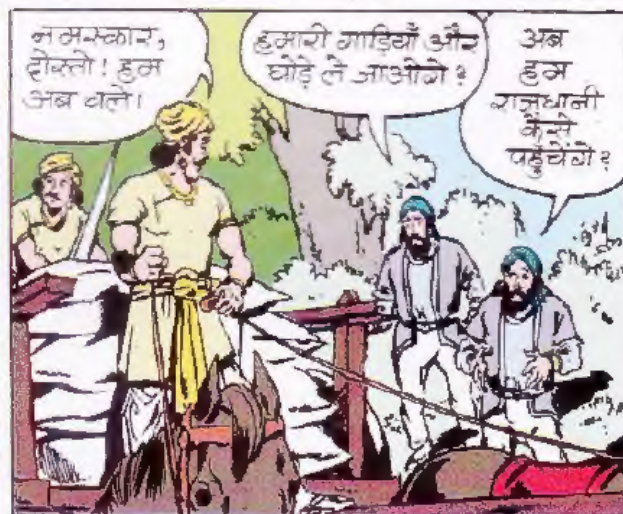
भूलूँगा कैसे, मेरे स्वामी!

वैज्य गुप्त ने राज्य तो हथिया लिया, पर जनता का मन नहीं जीत पाया।



मैं तोरमाण हूँ। वैज्य गुप्त, मुझे प्रणाम कर! वैज्य गुप्त, मेरे पैरों की धूल चाट कर साफ कर! वैज्य गुप्त, सिर के बल खड़ा हो जा!

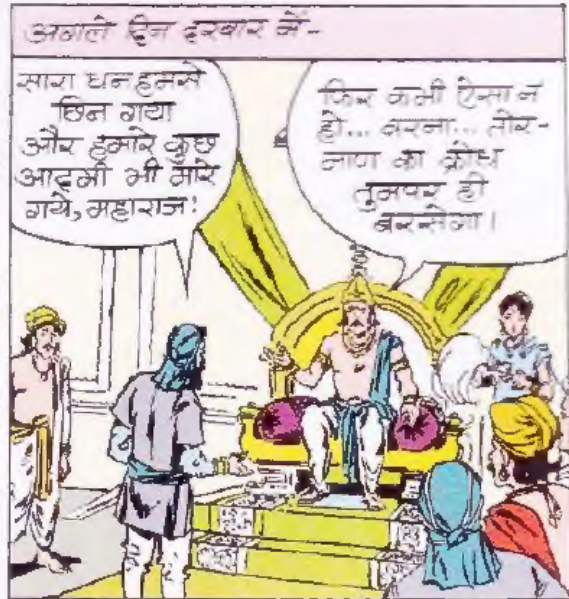






ये कौन
है?
लुटेरे?

उनसे भी बुरे!
बालादित्य
के आदमी
हैं!



अगले दिन दरबार में-

सारा धन हमसे
छिन गया
और हमारे कुछ
आदमी भी मारे
गये, महाराज!

फिर कभी ऐना न
हो... करना... तीर-
जाण का क्रोध
तुमपर ही
बरसेगा।

कुछ दिनों बाद रात को दो आदमी शाही अस्तबल
में घुस आये।



मैंने फाटक खुला
छोड़ दिया है। अब
घोड़े खेलता
रहे...

और मैं घास
में आग लगाता हूँ।
छाँटे छोड़ो, अब
तुम नज़ी जगह
चलेगो... बालादित्य
के यहाँ!



कुछ ही क्षणों में-

अरे, रोको! घोड़े भागे
जा रहे हैं। कौड़े आओ!
रोको!

आग!
आग!

शाही
अस्तबल...
बुझाओ!

अगले दिन अस्तबल का अधिकांश भाग से काँपता हुआ
राजा के सामने उपस्थित हुआ।



...और कई छोड़े जंगल
में गायब हो गये,
महाराज। वे शायद
ही वापस मिलें।

सूख, इस असाव-
धानी के लिए तुम्हें
कौड़े लगवाये जायेंगे!

इस तरह के धावे बार-बार होने लगे लगे -

बालादित्य को पकड़ कर मौत के घाट उतार देने पर ही मैं वैन से बैठ पाऊँगा।

वैन्य गुप्त इस तरह चिंता में था...

...पर मगध की जनता प्रसन्न थी।

इतनी बुरा सेना के होते हुए भी वैन्य गुप्त बालादित्य को सामना नहीं कर सकता!

मैं तो मनाता हूँ कि वे शीघ्र ही मगध लौटें!

इस बीच वंग में गोपचंद्र ने वैन्य गुप्त की अधीनता का जुआ उतार फेंका और स्वाधीन हो गया।

हम आजाद हैं! वैन्य गुप्त अब हमारा सम्राट नहीं है। मेरा विश्वास है, शेष मगध भी यही मार्ग अपनायेगा।

वैन्य गुप्त के दुर्भाग्य से तभी लगभग अपनी राजधानी, पंचेका * में मृत्यु-शैया पर था।

बेटे मिहिरकुल, इस साम्राज्य की बागडोर अब तुम्हारे हाथ में है। स्थानु † तुम्हारा कल्याण करें।

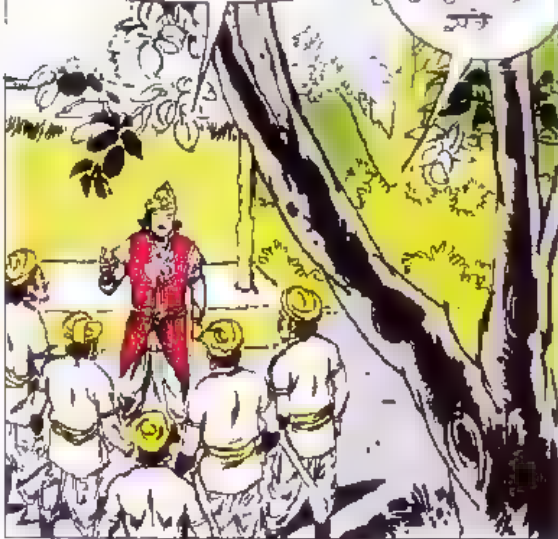
मैं कोई कस्तर नहीं रखूँगा, पिता जी!

बालादित्य और मराठा

लोकमान की मृत्यु का समाचार बालादित्य को मिला तो—

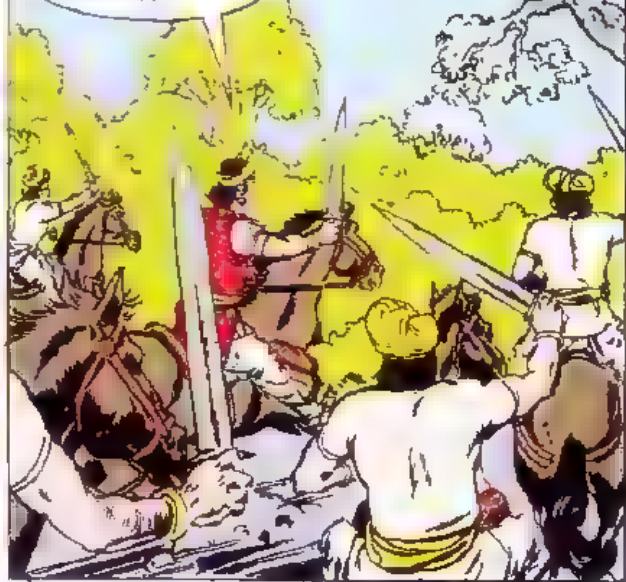
मिहिरकुल उधर
हुआ साम्राज्य की सहा
लने में लगा है। हम उधर
मराठा पर अधिकार
कर लें।

मिहिरकुल
के पास में
मराठा हैं जो
इसलिए कि,
हमारे
साम्राज्य की
रक्षा के



बालादित्य और उसकी सेना ने मराठा की ओर बूच कर दिया।

अपनी प्यारी
जातधर्म की रक्षा के
लिए कितना उता-
उता हूँ मैं!



उधर गदलिपूर में

मृग मृगलें:
हमारे
साम्राज्य
जानम आ
रहें हैं!

तब तो मराठा
का सिंहासन
उनके लिए
ज्वाली करवाना
चाहिए।

देश-देशी को
अब एक क्षण
भी सिंहासन
की अपेक्षा नहीं
करने देंगे!



अब वे जहल पर चढ़ देंगे।

मराठा
की जय!

बालादित्य
की जय!



इनसे जान
बचानी
होगी।
इनसे जान
बचानी
होगी।
इनसे जान
बचानी
होगी।

अब जानने की बाजी जैस्य गुप्त की थी। वह भाग भी गया और मगध में फिर कभी दिखाई नहीं दिया।



मगध के द्वार बालादित्य के स्वागत के लिए खोल दिये गये।



बालादित्य
अमर हैं!
गुप्त साम्राज्य
का जय!

सिद्धिकृत के स्वर्ण पाकर क्रोध में अब गया।

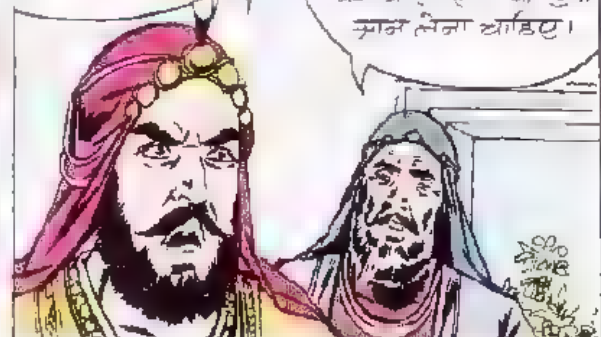
मैं मगध की ईंट
और ईंट बजा दूंगा!

हमारे, -लातली ठीक
अही मगध बाजार में
काम लेना होगा, लाल
के बदले मगधियों
काम होगा



समझोता हुआ जल
नल के दुश्मन थे।
हमारे के जल से नल
शरीर जल से
ही छोड़ दे।

मगध के सामने
मगध के लिए
नल मगध का
हमारे के ही है।
मगध के मगध
मगध के मगध का
मगध के मगध का



सिद्धिकृत के छोटे भाई ने भी मंत्री का सम्मर्शन किया।

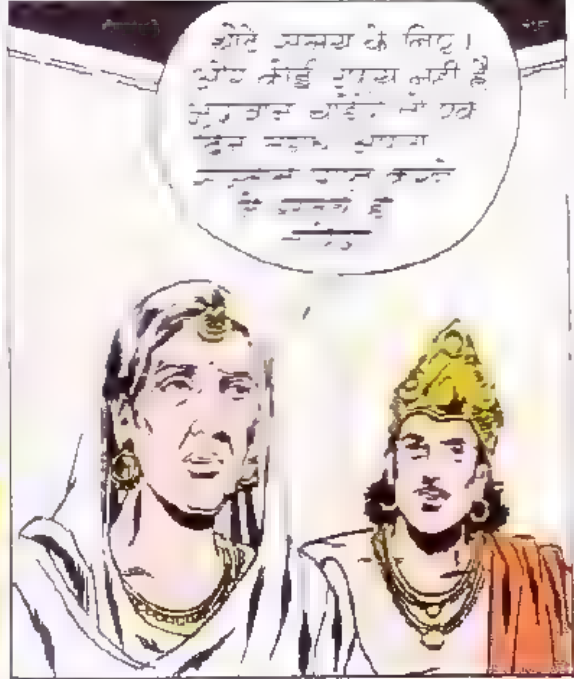
बड़ी सूख-बूझ की बात
इन्होंने कही है। हमें यही
करना चाहिए

ठीक है। लेकिन
बालादित्य को खिरान
भरा करना
होगा।



बहुत अच्छा।
हमारे हमारे कुछ
नुकसान नहीं होगा
और मगध भी
मिल जायेगा।

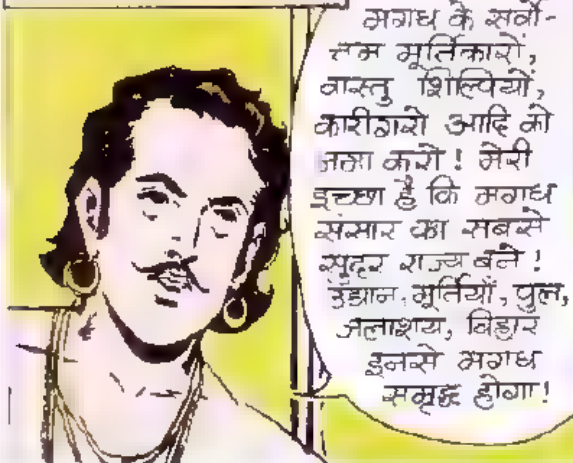


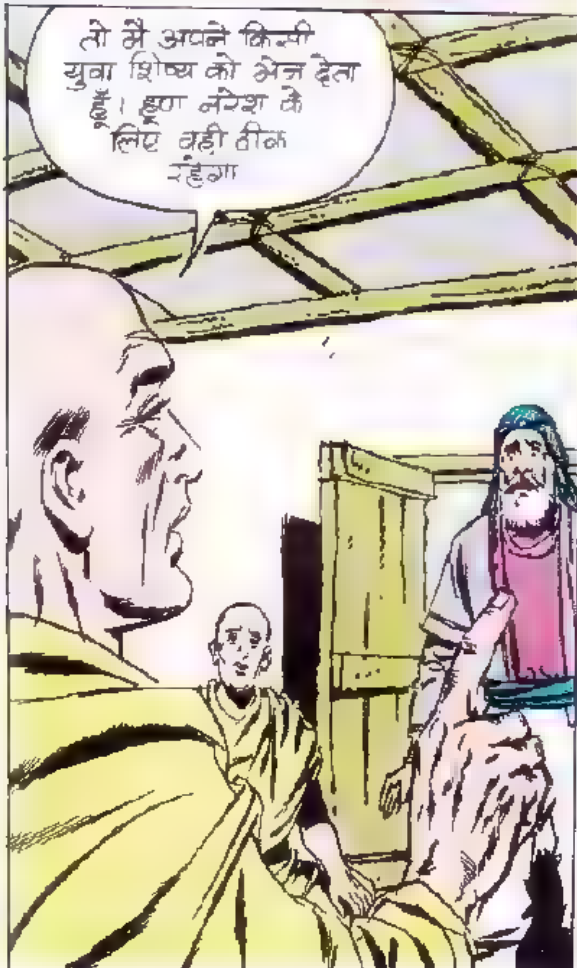


बालादित्य ने अपनी माता की बात मानी। फिर उसने सैन्य के लिए जैको नवान भर्ती किये।

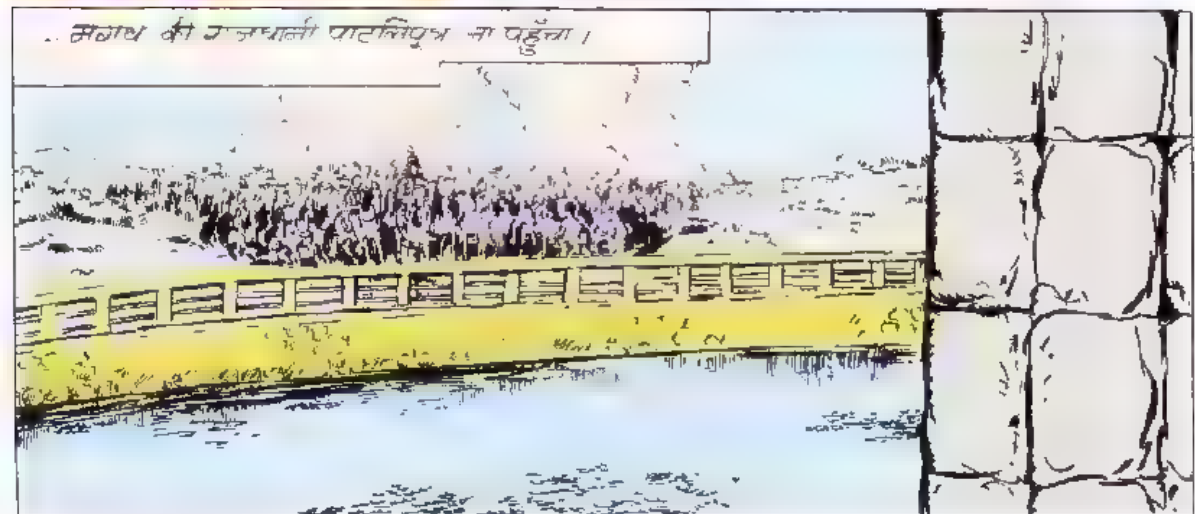
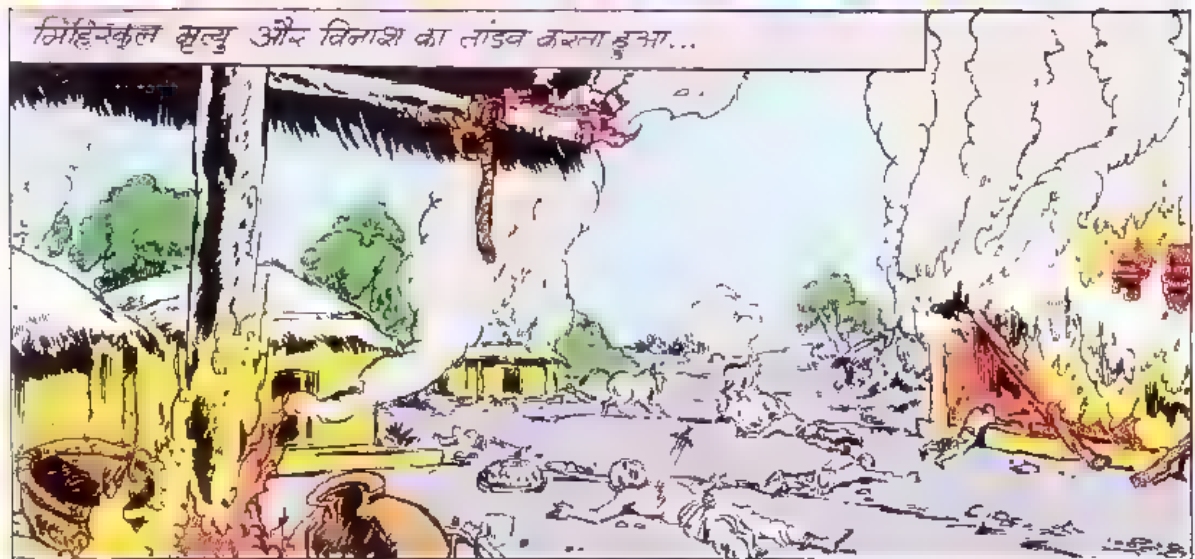


यह मगध का गौरव बढ़ाने के लिए भी बड़ी प्रयास से प्रयत्न करने लगा।





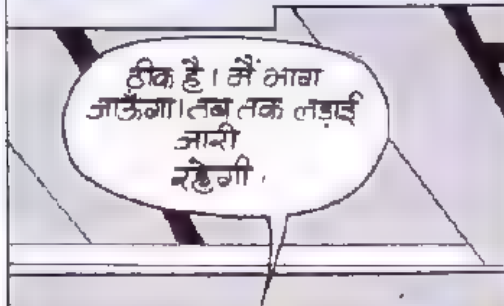








बालादित्य जरा देर चुप रहा। फिर-



और वे नम्र वर सहे, पर शत्रु से पार नहीं पा सके।



स्वाजिभक्त मंत्री की विश्वासघाती नीति पर कि अब कोई धारा नहीं है, वह बालादित्य के पास आया।



महाराज, कितना हाथ से जाता रहा! इंग राजमहल की ओर आ रहे हैं।

साथो, पुत्र, आना जैसा... मंगल के हिल के लिए



बालादित्य कहाँ है? उसे पेश करो

बालादित्य के भाग निकलने की बात सुन कर वह क्रोध में भर गया।



बालादित्य भाग जाता तो पारतिपुत्र और इसकी रिश्ता की इसकी कीमत ठुकरा होगी- ऐसी कीमत जो के कभी अलगा नहीं

और क्या कीमत थी वह!



मिष्टानुक्त को इसपर भी संतोष नहीं हुआ।

मेरी प्यारा
बुकेगी तो सिर्फ
बालादित्य
के खून
से!

अब कीजिए भाई
साहब। आपकी बहुत
दिन प्यासा नहीं
बहना पड़ेगा।

बालादित्य को खोजने के लिए जानसून खाना कर दिये गये।
कुछ महीने बाद-

बालादित्य
और उसके
साथी वंग के
किनारे के पास
तपु पर
छिपे हैं।

मैं अभी वंग
को कूब करूँगा।
इस बार
वह भाग
नहीं पायेगा।

मेरे लौटने तक मंगंध का
राज-काज तुम
सकहा लो।

बड़ी
खुशी से,
भाई साहब।



सिंहिकुल के सिपाही आगे बढ़ते गये



और झोली-झोली जगह में जा पहुँचे। तभी अचानक



मैंने छोटे-से
द्वीप पर स्वागत
है, बादशाह सलामत
क्या सेवा कर सकता
हूँ मैं आपकी?

यह देख कर बड़ा अच्छा
लगा कि हुण सलतनत का
पुराना वफादार अपना
दंग्र नहीं भूला है। लेकिन
मैं तुमसे मेरा कगने
नहीं, तुम्हारा खून पीने
आया हूँ, बालादित्य!

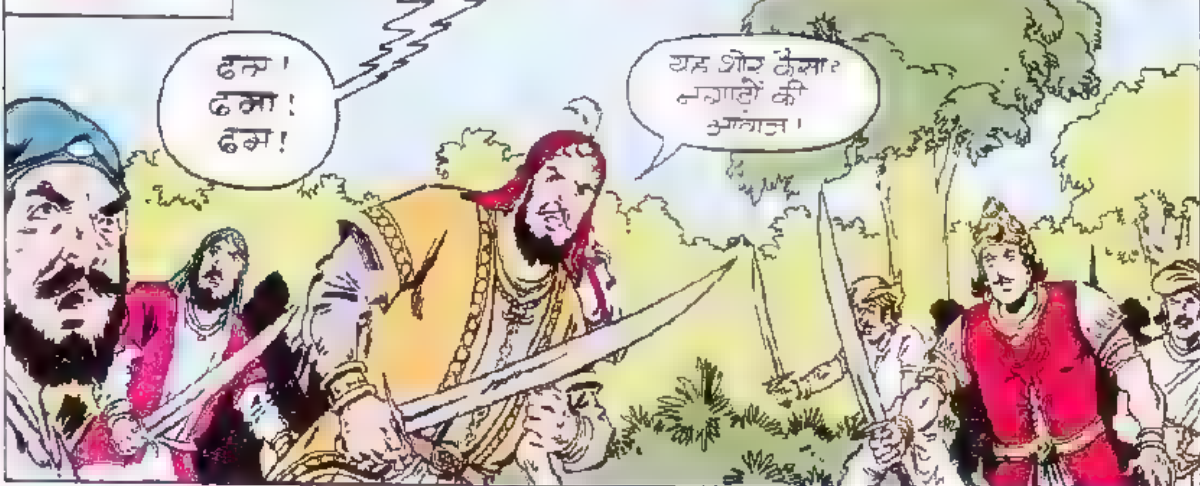


वह ने मैं तुम्हें नहीं
दे सकता, सिंहिकुल,
तुम्हें खुद निको
लेना होगा।



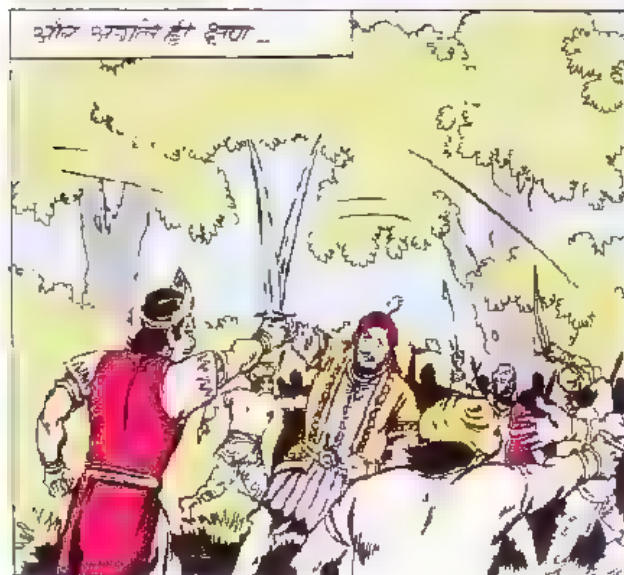
काट डालो
इन्हें!

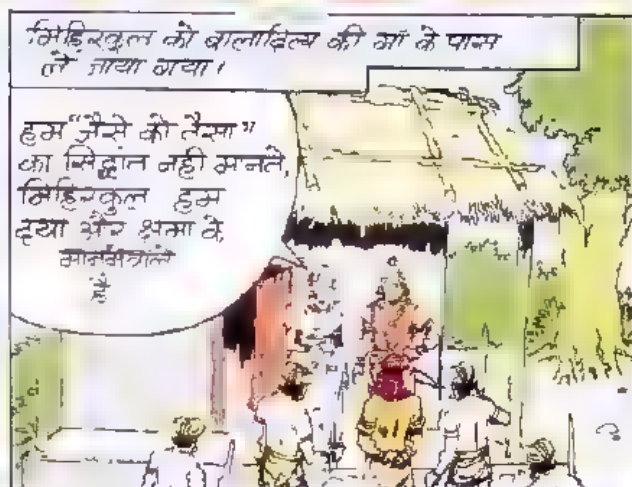
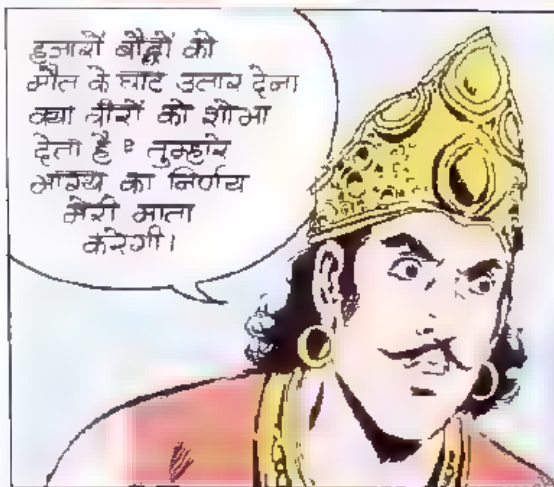
अचानक



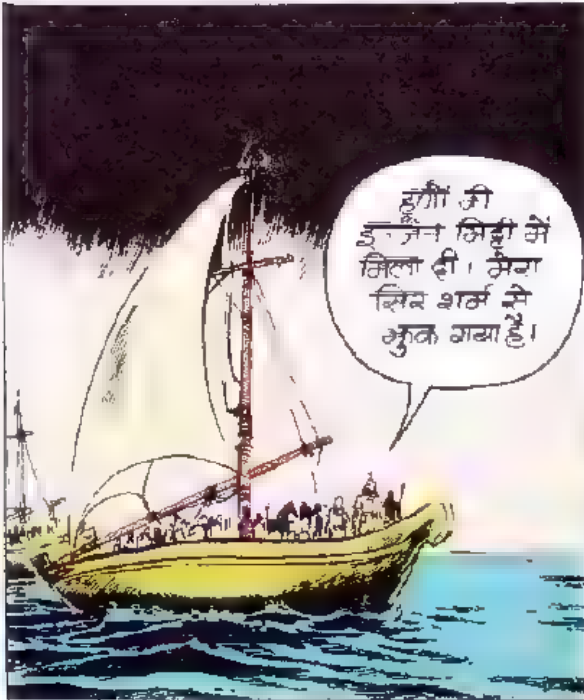
हन्त!
हन्त!
हन्त!

यह जोर कैसा?
मनगलों की
आवाज़!





सिंहनकुल उद्यम मन से अपनी राजधानी,
साकल को लौटा।



पर जब वह लौटे तो सिंहनकुल
विजय में आया

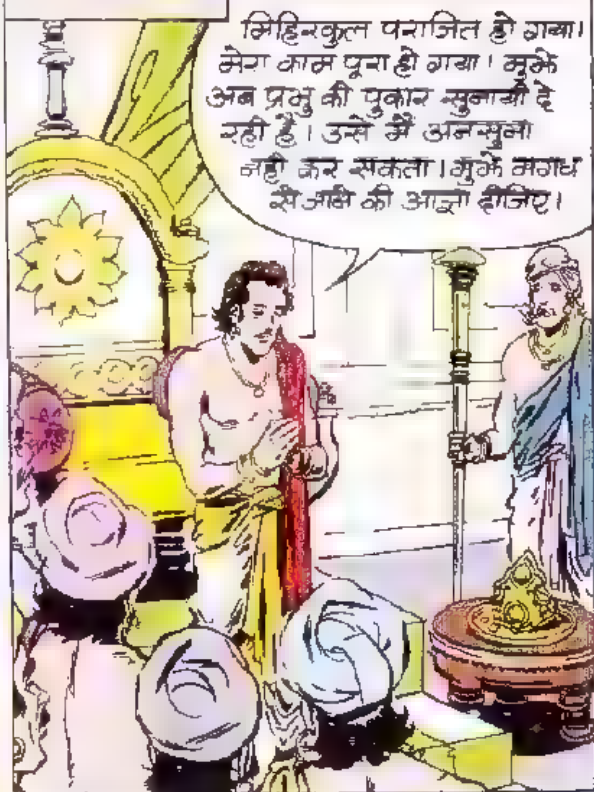




उधर बालादित्य पाटलिपुत्र लौट आया।



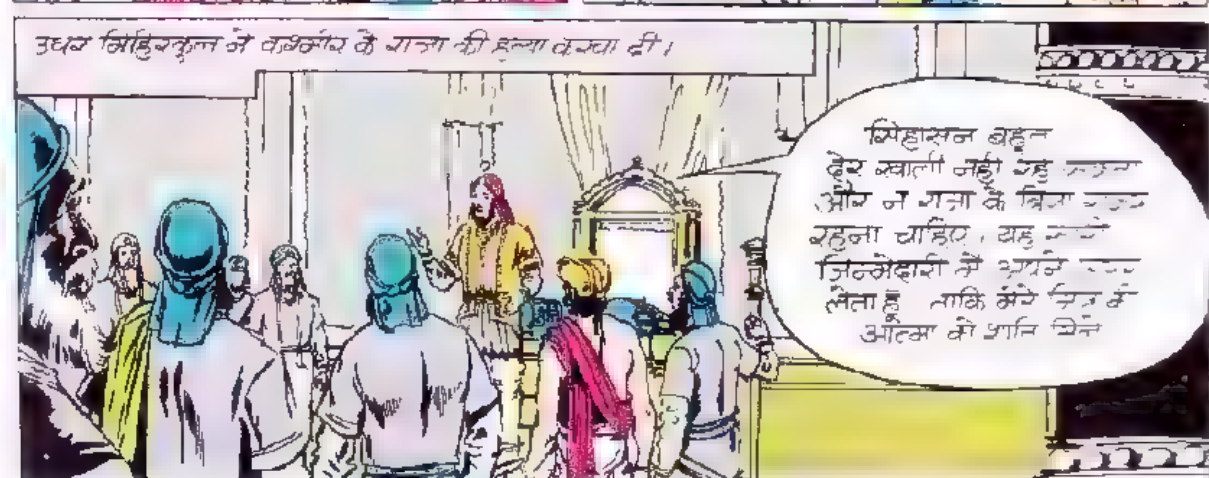
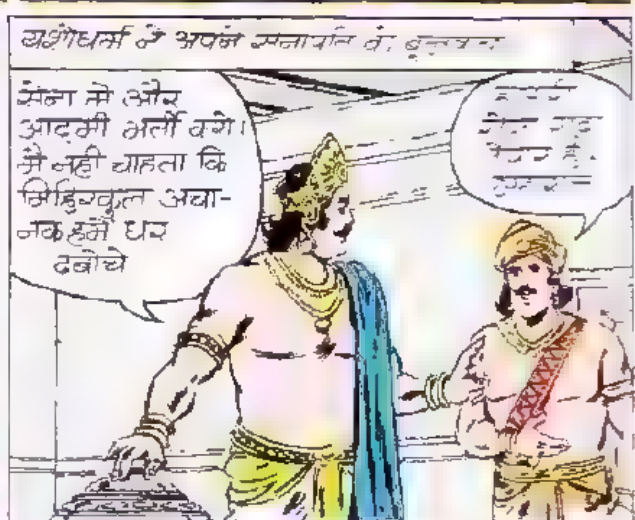
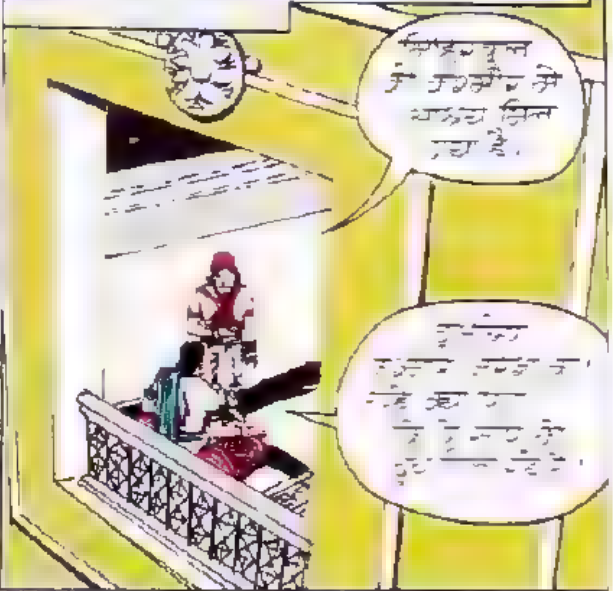
मगध के छान छीरे धीरे भरने लगे और वह
सोया गौरव फिर से प्राप्त करने लगा। साथ
ही बालादित्य का मन मगध से चिन्कल
होने लगा।



राज्य के लिए इतने कष्ट केलने के बाद बालादित्य उसे छोड़ कर बुद्ध की शरण चला गया।



इस बीच मल्लिका का राजा, यशोधर्म सिद्धिकुल की हथ गतिविधि पर बराबर ध्यान रखे हुए था। एक दिन उसने जासूसों से उत्तर से आकर मल्लिका के राजा के बारे में पता चला।



कहानी में जो लोग तो अच्छा पर बिहिदकुल में
हमारे दोस्तों नहीं हुआ।

मैं लड़ाई और युद्ध-
जमाने के बीच पैदा हुआ हूँ।
मेरे कानों में पहली आवाज
लगे की नहीं, युद्ध की गरिबी।
मैंने पहले-पहल युद्ध के
जख्मी सैनिकों ही देखी थी
इन्हे तो कुल नहीं
पाया...

सुना है
वाध्यान का
राज्य सुब
तस्वक पर है
भायती शिका-
यता का इनाज
शायद वहा
मिलेगा।

सिंहिकुल ने गांधार को कूच कर दिया।

कह देता कि साथ में चले और मैं-मैंने ज़ाहली
बाँटने में चला आ जहाँ था कि एक हाथों
नगासना कर लिए रहा।

यह देख कर सिद्धिचक्रा दुःखी होकर के बहते
बड़ा प्रसन्न हुआ।

हूँ हाँ हाँ !
क्या खुब ! कुछ और
जाना निशा तैयें ।
जब, हाथी और
जाना

五五五五五

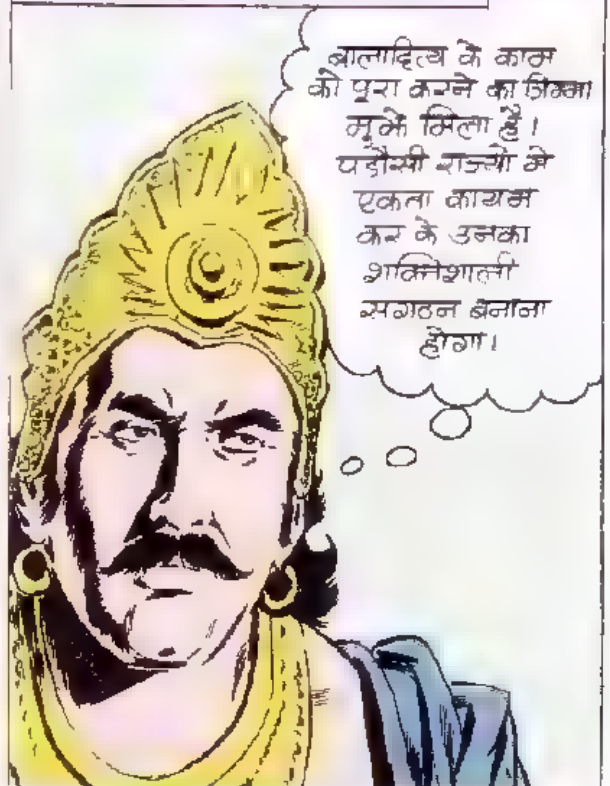
उसने यह क्रूरता का खेल शुरू हुआ। करने हुए हाथियों की छिछाड़ में मिहिरकुल पर उसकी नज़र पड़ा था।



मिहिरकुल फिर आगे बढ़ा और गांधार ना पहुँचा। वहाँ किसीने उसका स्वागत नहीं किया।

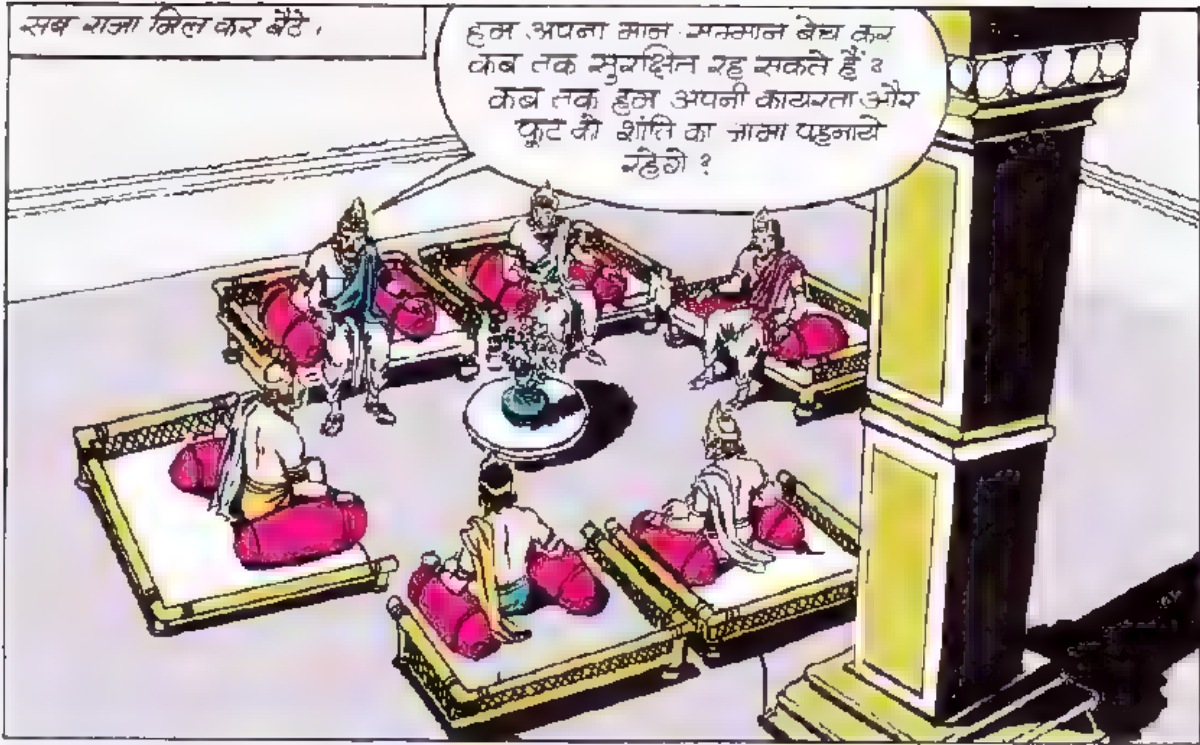


जब मिहिरकुल की योजना यशोधर्म को मालूम हुई-



सब राजा मिल कर बैठे ।

हम अपना मान सम्मान बेच कर
कब तक सुरक्षित रह सकते हैं ?
कब तक हम अपनी कायबता और
फूट की शोष का जामा पहनाये
रहेगे ?



बात राजाओं के मन में उत्तर
गयी ।

तुम ठीक कहते
हो, यशोधर्म हम
अब साथ जियेगे या
साथ अड़ेगे - लेकिन
अपनी आन पर धब्बा
नहीं लगने देगे ।

तो मित्रि
कुल मालवा
के मैदानों में
अपना अंतिम
युद्ध लड़ेगा ।



लड़ाई की योजना बनायी गयी ।

मालवा के मैदान में मैं
मिहिरकुल का सामना करूंगा ।
फिर तूझ लेंगे उसकी बगल
में और पीछे में धक्क करेगा ।
मिहिरकुल को पूरी तरह हरा
देना है अभी नहीं तो
फिर कभी नहीं ।



मिहिरकुल को क्या पता था कि उसका
जिन्ना बचावत होगा! वह जीत के
पलने देखता हुआ मालवा पहुँच
गया।



सुबह हुई और दोनों सेनाएं आगने-आगने
आ गयीं।



मिहिरकुल,
जिंदबाद! हूण सल्ल-
नत जिंदबाद!

यशोधर्म की जय!
मालवा की जय!

रात को उसने डेरा डाला—



कल के
दिन मगध
को नया राजा
मिलेगा—
मिहिरकुल!

हम हूण
सिपाही दिल से
यही मनाते हैं।

अचानक—



हमपर पीछे
से हमला हो
रहा है!

बगल के
हिस्से से दो-चार
सौ सिपाही ले
कर उन्हें मार
भगाओ।

पर मिहिरकुल की तभी दूसरा धक्का लगा।

हमपर बगल के हिस्से से भी हमला हो गया, हुजूर!

शीतान के बच्चे! कुछ आदमी बीच से लो और बगल-वाले हिस्सों को मजबूत करो!



शान होते-होते मिहिरकुल जान गया कि भाग्य उसके साथ नहीं है।

अब भागने के अलावा कोई रास्ता नहीं है - जल्दी सोचना पड़ेगा।



हम अपनी पगड़ियाँ बदल लें। तुम दुश्मन को अटकाओ और मैं आगने की कोशिश करता हूँ। हम लोग फिर मिलेंगे।

जो हुक्म हुजूर की।



मिहिरकुल जैसे ही भागा-

वह तो मिहिरकुल है - मैदान से भाग रहा है! पगड़ी बदल ली है! पीछा करो और गांधार तक खदेड़ दो!

बहुत ठीक, स्वामी!



यशोधर के सैनिक जब तक उसका पीछा करते रहे...



...जब तक वह आँखों से ओझल नहीं गया।

अब उसे खोजना व्यर्थ होगा। हुज सालवा लौट चलें। मिहिरकुल अब कभी इधर मुँह नहीं करेगा।



मिहिरकुल मिहिरकुल गांधार लौटा - पराजित और निराश। हुज तबहु से दूटा हुआ! उसकी बाकी जिंदगी बिना किसी घटना के बीती...



...और दूसरी ओर जिन दो शूरवीर राजाओं ने हुजों से लोहा लिया उनके आज भी गुण गाये जाते हैं।



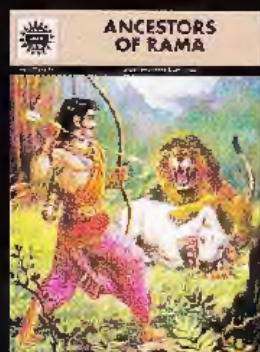
बालादित्य और यशोधर्मा

5 वीं शताब्दी ईस्वी में गांधार या आधुनिक अफगानिस्तान के हूणों ने अपनी नज़र भारत के समृद्ध राज्यों पर प्रशिक्षित की थीं। तोरोमाना, हूणों के नेता और उनके बाद उनके पुत्र मिहिरकुला ने मगध के समृद्ध राज्य को जीतने के लिए दृढ़ संकल्प किया। लेकिन उनके शासक, नरसिंह गुप्ता बालादित्य में एक औपचारिक रूप से प्रतिद्वंद्वी था। और जब हूणों ने मालवा पर अपनी नज़रें जमाई तो वह राजा यशोधर्मा थे जिन्होंने उनसे युद्ध किया।

ए सी के: के अन्य बहादुर दिल:



और भी देखें:



महाकाव्यों और पौराणिक कथा

भारतीय क्लासिक्स

दंतकथाएँ और हास्य कथाएँ

दूरदर्शी

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-54-5



9 789390 055548